Philosophy

CC-5 Sem III

Jain Ethics

Triratna (त्रिरत्न)

जैन दर्शन में त्रिरत्न को ही मोक्ष का साधन बतलाया गया है। जैन दार्शनिक सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान, और सम्यक चारित्र को त्रिरत्न कहते हैं। मानो ये जीवन के अलंकार है। तत्वार्थाधिगम सूत्र में ही उमास्वामी ने कहा है—"सम्यकदर्शन-ज्ञान-चारित्राणि मोक्षमार्गः"

अर्थात् सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान और सम्यक चारित्र ही मोक्ष का मार्ग है। तीनो के सम्मिलित होने पर ही मोक्ष मिलता है।

(1) सम्यक दर्शन :—

सत्य के प्रति श्रद्धा की भावना को रखना सम्यक दर्शन कहलाता है। सम्यक दर्शन के आठ और अंग बतलाए गए हैं।

(i) निःशंकता :— सत्य मार्ग के अनुसरण में साधक को निःशंक होना चाहिए।

(ii) निःकांक्षिता :— साधक को निष्काम होकर साधना में लगना चाहिए तथा किसी प्रकार के लौकिक सुख की इच्छा नही करनी चाहिए।

(iii) निर्विचिकित्सा :— साधक को मनुष्य के शारीरिक वैभव पर ध्यान न देकर उसे उसके गुणो पर ही ध्यान देना चाहिए।

(iv) अमूढ़ दृष्टि :— साधक में इतना विवेक होना चाहिए कि वह कुमार्ग पर चलने वालो की बातो में न आए तथा सन्मार्ग से विचलित न हो।

Date ______
Page ______

(v) उपबृहण :- साधक को अपने गुणों को बढ़ाते रहने का प्रयत्न करना चाहिए।

(vi) स्थितिकरण :-
किसी प्रलोभन में पड़ कर सन्मार्ग का त्याग नहीं करना चाहिए।

(vii) वात्सल्य :- साधन को अपने सहयोगी से स्नेह करना चाहिए।

(viii) प्रभावना :- साधन को अपने सच्चे धर्म का प्रचार करना चाहिए। सम्यक दर्शन के ~~विपरीत~~ विपरीत है मिथ्यादृष्टि। पाँच प्रकार की मिथ्यादृष्टि है जिससे साधक को बचना चाहिए।
शंका, आकांक्षा, विचिकित्सा, अन्यदृष्टि, ~~प्रशंसा~~
प्रशंसा ~~स्तव~~

सम्यक दर्शन का अर्थ अंधविश्वास नहीं है, जैन दार्शनिक इस बात की शिक्षा नहीं देते है कि हमें किसी के उपदेशों को आँख मूँदकर मान लेना चाहिए।

(2) सम्यक ज्ञान :- सम्यक ज्ञान उस ज्ञान को कहा गया है जिसके द्वारा जीव और अजीव के मूलतत्वों का पूर्ण ज्ञान होता है। जीव और अजीव के अन्तर को न समझने के फलस्वरूप बंधन का प्रादुर्भाव होता है। जिसे रोकने के लिए ज्ञान आवश्यक है। यह ज्ञान असंदिग्ध दोषरहित ज्ञान होता है। सम्यक ज्ञान की प्राप्ति में कुछ कर्म बाधक प्रतीत होते हैं। अतः उनका नाश करना आवश्यक है, क्योंकि कर्मों के पूर्ण विनाश के पश्चात् ही सम्यक ज्ञान की प्राप्ति की आशा की जा सकती है।

(3) सम्यक चरित्र :-
जो ज्ञान मोक्ष प्राप्ति में ~~सहायक~~ सहायक हो, उन्हें ग्रहण करना, और जो ~~सह~~ विरोधी हो उन्हें छोड़ना ही सम्यक चरित्र कहलाता है। सम्यक चरित्र के द्वारा ही जीव अपने कर्मों से मुक्त हो सकता है क्योंकि कर्मों के कारण ही बंधन और दुःख होते हैं।

Scanned with CamScanner

A.B.M. COLLEGE JAMSHEDPUR

Date______
Page______

सम्यक चारित्र जैन साधना का सबसे महत्वपूर्ण अंग है, क्योंकि मनुष्य सम्यक् कर्म से ही कर्ममुक्त होकर जीवन के परम लक्ष्य को प्राप्त करता है।

सम्यक चरित्र के लिए पाँच महाव्रतो का पालन आवश्यक है जो इस प्रकार है।

(I) अहिंसा :—

जैन साधना के पंच महाव्रतो में अहिंसा का प्रमुख स्थान है। जैन दर्शन में यह महाव्रत सम्पूर्ण आचार संहिता में शामिल है। अहिंसा से तात्पर्य है— मनसा, वाचा, कर्मणा, तीनो से होने वाली हिंसा का परित्याग। जैन धर्म में अहिंसा का तात्पर्य मात्र दूसरो को कष्ट पहुँचाने से बचना ही नही है, बल्कि उनके उपकार में संलग्न रहना भी है। यदि व्यक्ति उपकार करने की योग्यता रखता है फिर भी वह ऐसा नही करता तो यह भी हिंसा है। जैन दार्शनिक सन्यासियो से कठोरतापूर्वक अहिंसा के पालन की उपेक्षा करते है।

(II) सत्य : सत्य से आशय है असत्य का परित्याग व तथा सत्यवादिता से तात्पर्य है प्रिय एवं सत्य वचन का पालन करना, असत्य, कटुवचन का पालन भी अनुचित है। सत्य वचन का पालन करने के लिए व्यक्ति को क्रोध, लोभरहित एवं परनिन्दा से बचना चाहिए।

(III) अस्तेय :—

अस्तेय का तात्पर्य है चोरी न करना। इस व्रत को लेने पर बिना किसी दूसरे की अनुमति के वस्तु नही लेनी चाहिए। जैन दर्शन अस्तेय अर्थात् चोरी करने को बुरा मानता है। चोरी करके व्यक्ति दूसरे के धन का अपहरण करता है। पराई वस्तु को चुपचाप ग्रहण करना भी अस्तेय कहलाता है।

(IV) अपरिग्रह : — अपरिग्रह का तात्पर्य है त्याग करना। यह व्रत व्यक्ति को वस्तुओ के अनावश्यक संग्रह एवं लोभ को रोकता है। जैन दर्शन के अनुसार इस व्रत के लिए उन सभी विषयो का परित्याग करना पड़ता है जिनके द्वारा इन्द्रिय - सुख की उत्पत्ति होती है।

Scanned with CamScanner

ऐसे विषयों के अंतर्गत सभी प्रकार के शब्द, स्पर्श, रूप, स्वाद तथा गंध है। जैन संन्यासी भिक्षापात्र को भी अपना नहीं कह सकता। यथावार स्वामी ने अपरिग्रह पर बहुत ज़ोर दिया है। उन्होंने वस्त्रों तक को त्यागने की भी बात कही है, क्योंकि वस्त्रों का संग्रह भी परिग्रह है। वस्तुओं के संग्रह से भी लोभ होता है। अपरिग्रह के अन्तर्गत वस्तुओं के त्याग के साथ-साथ ममत्व भाव का भी त्याग है। सच्चा अपरिग्रह वस्तुओं का पूर्णतः त्याग है।

(5) ब्रह्मचर्य :—

जैन दर्शन में सभी प्रकार की वासनाओं का त्याग ब्रह्मचर्य कहलाता है। इसके पालन से इन्द्रियाँ नियमित रहती हैं क्योंकि कई प्रकार की कुप्रवृत्तियों से बच जाता है। ब्रह्मचर्य सभी प्रकार की कामनाओं का परित्याग है। ब्रह्मचर्य व्रत का पूर्ण रूप से पालन करने के लिए सभी प्रकार की कामनाओं का त्याग करना पड़ता है — चाहे उन कामनाओं का विषय मानसिक हो या बाह्य, अपने लिए हो दूसरे के लिए।

इस प्रकार त्रिरत्नों का पालन करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है। उपयुक्त मार्ग पर चलकर जैन साधक अपने ध्येय मोक्ष को प्राप्त करता है, तब उसे जिन केवली या अर्हत की संज्ञा प्राप्त होती है वह अनन्त ज्ञान चतुष्टय से युक्त हो जाता है। यही मानव जीवन का उद्देश्य होता है।

—x—